श्री:

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष
१७
सं० २०३१

संख्या
३
वैशाख























वार्षिक
मूल्य
६.००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य २.६५

विषय-सूची

क्रम विषय	लेखक	पृष्ठ
१ 'जय भारतमातः !'	श्री चन्द्रदत्त जोशी शास्त्री	३
२ अराजकताकी ओर बढ़ता १९७४-७५ का भा०	सम्पादकीय	४—११
३ दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	११—१३
४ खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	,, ,, ,,	१४—१५
५ कुम्भ महापर्व हरिद्वार	,, ,, ,,	१६
६ धनके स्रोत	महाराजा श्री विक्रमसिंहजी	१७—२०
७ मङ्गलीयोग और धनयोग	श्री रघुवीरशरण शर्मा आयुर्वेद वृ०	२०—२२
८ गवाही (एक सच्ची अद्भुत घटना)	श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य-विशारद	२२—२५
९ अध्यात्मवाद, बड़प्पनका प्रतीक ग्रह बृहस्पति	श्री बालकृष्ण इन्दोरिया	२६—३०
१० फलित पर विचार	श्री रघुवीरशरण शर्मा आयुर्वेद वृ०	३१—३३
११ ज्योतिषमें भुवनभास्कर सूर्य ग्रह नक्षत्र	श्री आचार्य प्रकाश	३३—३६
१२ पारम्परिक चमत्कार पूर्णयोग	श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा आयुर्वेदाचार्य	३६—३७
१३ व्यापार-वाणी	श्री पं० शंकरलाल गौड़ 'शम्भु कवि'	३८
१४ त्रैमासिक राशिफलविमर्श	श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय ज्यो०	३९—४४
१५ त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन	ज्यतिषरत्न श्री राजाराम जैन	४४—४८
१६ त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल	श्री दुर्गाप्रसाद गुप्त साहित्य-विशारद	४८—५१
१७ त्रैमासिक पर्व व्रतादिनिर्णय	'श्रीविश्वविजय पञ्चाङ्ग' से	५२
१८ पं० श्रीगणपति देवजीका देहावसान	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	५३
१९ साहित्य-समीक्षा	,, ,, ,,	५४—५५

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य

एम.ए (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्ज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन समान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य ९ ०० नौ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पैंसठ पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिगमय"

ज्योतिषमती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ़ दि० ७ अप्रैल १९७४ से ४ जुलाई १९७४ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिषमती' भूतले ॥

वर्ष १७ | सोलन, चैत्र शु० १५ शनिवार, सं० २०३१ वि० १६ चैत्र शाके १८९६ (६ अप्रैल १९७४ ई०) | संख्या ३

'जय भारतमातः' !

जय भारतमातः जय-जय भारतमातः !
कोटि-कोटि मनुजानां त्वं जननी तातः ॥
मुकुटं घनहिमधवलं भालः कैलासः ।
विन्ध्यः कटिः शिवालक-शैलः कचपाशः ॥ जय०

गंगा-यमुने माला रेवा ते रशना ।
चरणे लंका हैमी मलय-भवः श्वासः ॥
शस्य श्यामल वसने ! शशि-मण्डल तिलके !
रवि-नीराजित मूर्ते ! जलित-निधौ वासः ॥ जय०

तव गुण गरिमा गाथां वाल्मीकि व्यासौ ।
गायं-गायं विरतौ न च कालिदासः ॥
रामकृष्ण यशसा ते मुखमोजोभरितम् ।
शिव-गोविन्द-प्रतापा मधुरतमो हासः । जय०

वातः सायं प्रातः सेवितुमायातः ।
पयोधरो लोकानाम् जीवातुर्जातः ॥
जय भारतमातः जय-जय भारतमातः ॥

—चन्द्रदत्त जोशी शास्त्री

सम्पादकीय विचार—

अशान्ति, अव्यवस्था और अराजकताकी ओर बढ़ता
१६७४--७५ का भारत

सत्ता हस्तान्तरणके २६ वर्ष बाद भी अंग्रेजी शासनका अन्त करने और विभक्त भारत भूमिको संयुक्त करनेकी दिशामें कोई प्रयत्न नहीं किया गया। फलतः शासन व्यय घटानेके बदले बढ़ाया जाता है। यही नहीं सुरक्षा व्यय भी बढ़ाया जाता है। यह गरीब देशकी गरीबी बढ़ाता है। नाजिमअली (असम) इस कारण दुःखी है कि उसके बिके तीन बच्चों का मामूली मूल्य मिला। यह उसके वास्ते एक महीनेका खर्चा भी पूरा नहीं है। उसका १२ सालका लड़का दक्षिण सालमारा बाजारमें किसीने नहीं खरीदा। दरिद्रता किस सीमा तक पहुँच गई है, इसको अंग्रेजी शासन नहीं देखता। प्रधानमंत्री आंख मूंदकर मास्कोका अनुकरण कर वैयक्तिक साहसको नष्ट कर मध्यम वर्गको कुचलनेका उपक्रमण अभिक्रमण कर रही हैं। एक उदाहरण लीजिए। पैट्रोल का दाम चार गुना बढ़ा देनेसे भारतमें बिजली संकट उत्पन्न हो गया। परन्तु इस देशकी इस्लाम-भक्त सरकारने तेल एकाधिकारकी निन्दामें एक शब्द नहीं कहा। इसके विपरीत उसकी खुशामद की। क्या यह आवश्यक था ?

'इण्डियन-शुगर' के अनुसार आधुनिक चीनी फैक्टरी १०० दिन काम करती है। यह प्रति टन गन्ना पेरनेसे बिजलीके ४० युनिट दे सकती है ! महाराष्ट्रमें हर साल ५० लाख टन गन्ना पेरा जाता है। अतः यह बिजलीके २० करोड़ यूनिट सालमें दे सकता है। परन्तु निजी साहस पर प्रतिबन्ध लगा रखा है। चीनी फैक्टरियां अक्तूबरसे अप्रैल तक बिजली दे सकतीं हैं। इस समय ही बिजलीकी मांग अधिक होती है। भारतमें बिजलीका संकट कम्युनिस्ट इन्दिरा सरकारने जानबूझकर उत्पन्न किया है। औद्योगिक उत्पादन ठप्प कर दिया। इस प्रकार मध्यम-वर्गका विनाश करनेके लिए भारतकी दरिद्रता बढ़ाई जा रही है।

दरिद्रता अशान्तिकी जननी है। बढ़ती भूखकी ज्वाला विनाशकी माँ है। गुजरातमें आज राष्ट्रपति शासनमें जो दिखाई दे रहा है, वह इन्दिरा-भारतकी विनाश नीतिका परिणाम है। अनुच्छेद ३५१ (ए) के अन्तर-निहित राष्ट्रपति किसी स्टेटका शासन लेते हुए उसकी विधानसभाका सारा कार्य पार्लमैंटको दे देता है। अतः विधानसभाका विसर्जन कर देनेसे शासन कार्य यथापूर्व चलता रहेगा। परन्तु इन्दिरा नीति अपनी गद्दी दृढ़ करनेकी है। देशका हित-साधन उसका लक्ष्य है नहीं। विधानसभाको बनाये रखनेसे उसके सदस्यों को मासिक वेतन बराबर मिलता रहता है और शासक पार्टीके भंग होनेका भय नहीं रहता। गुजरातमें विधानसभाको भंग करनेसे इन्कार कर श्रीमती गांधीने गुजरातकी शान्त होती ज्वालाको भड़काया है। गुजरातमें आन्दोलनका कारण पुलिसकी ज्यादती, पुलिस की गोलीसे निर्दोष मरे हैं, लुटेरे नहीं। इस

सत्यको न मानकर प्रधानमंत्रीका राग है—"हिंसासे डरकर सरकार कोई निर्णय नहीं कर सकती।" यह कहने वाले प्रधानमंत्रीसे पूछें कि राष्ट्रपतिका शासन क्या उसने हिंसाको बढ़नेसे रोकनेके वास्ते घोषित नहीं किया? श्रीमती गांधी कहती हैं कि "वह गुजरात भय के कारण नहीं गई यह बात नहीं, प्रत्युत इस लिए नहीं गई कि उनको परामर्श दिया गया कि उनके गुजरात जानेसे स्थिति और अधिक बिगड़ जायेगी।" प्रधानमंत्रीका प्रभाव, उनकी प्रतिष्ठा किस सीमा तक घट गई है, यह उनकी अपनी ही उक्ति बता रही है। उनके न चाहने पर भी गुजरात विधानसभा निकट भविष्यमें ही भंग होकर रहेगी। श्रीमती गांधी अब शान्तिकी नहीं, अशान्ति अराजकता और अव्यवस्थाकी मूर्ति है। १९७४-७५ के भारतके भाग्यमें क्या यही लिखा है?

चुनाव परिणाम इसी सत्यकी पुष्टि करते हैं

पांडुचेरी विधानसभाकी ३० सीटोंमेंसे कामराज-इन्दिरा-गुट मिलकर भी १२ से अधिक सीटें नहीं ले सका। श्री कामराजने अपनी पार्टीसे विश्वासघात कर उत्तरप्रदेशमें सिंडीकेट कांग्रेसका गला घोंट दिया और तमिलनाडुमें अपना राजनीतिक जीवन समाप्त कर लिया। १९६७ में श्री कामराजको एक छात्रने पटकी दी थी। इस बार फिल्मी नेता श्री रामचन्द्रन्ने दी है, यह मार भयंकर है। डिंडीगुलमें श्रीकामराजने श्री रामचन्द्रन्को मिली विजयसे कुछ नहीं सीखा। इसको सम्भव न होने देनेके वास्ते श्री कामराजने श्रीमती गांधीकी शरण ली। फल क्या हुआ? सिंडीकेट कांग्रेसकी सीटें ३ से बढ़कर पांच हो गईं। सत्ता फिर भी नहीं मिली। लोकसभाकी पांडुचेरीकी सीट इन्दिरा कांग्रेस हार गई। तमिलनाडुमें इन्दिरा-कांग्रेसका कोई प्रभाव नहीं। इसकी सहायता पाकर भी श्रीकामराज कोयम्बतूरकी लोकसभाकी सीट हार गए। श्री रामचन्द्रन्की सहायतासे कम्युनिस्ट कुमार मंगलम् की बहिन श्रीमती पार्वती कृष्णन् जीती। कोयम्बटूर विधानसभाकी सीट श्रीरामचन्द्रन्ने जीती। द्रविड़ मुनेत्र कषगम पराजित हुआ, पर शानसे। उसके किसी उम्मीदवारकी जमानत जब्त नहीं हुई। उसने किसी अन्य पार्टीसे चुनाव मैत्री भी नहीं की। अण्णा द्रविड़ मुनेत्र-कषगम उसकी ही एक शाखा है। तमिल राजनीतिका भविष्य फिल्मी नेता श्री रामचन्द्रन्की मुट्ठीमें है। (श्रीमती गांधी बहिष्कृत कर दी गई) दक्षिण भारतसे इन्दिरा-कांग्रेसकी इतिश्री हो गई। कांग्रेस अब कोई शक्ति नहीं रही। नई दिल्ली को अब ज्ञात हुआ है कि तमिलनाडुके हरिजन कांग्रेस प्रभावमें नहीं। अतः फरवरी १९७६ में तमिलनाडु में सत्ता-संघर्ष द्रविड़ मुनेत्र कषगम और अण्णा-द्रविड़-मुनेत्र-कषगमके मध्य होगा। दूसरे शब्दोंमें फिल्म कथा लेखक मुख्यमंत्री श्री करुणानिधि और फिल्मी हीरो श्री रामचन्द्रन्के मध्य होगा। इसमें कांग्रेस कहीं न होगी। वह इन दोनोंमेंसे किसीका पल्ला पकड़ कर ही जीवित रह सकती है। संयुक्त भारतकी दृष्टिसे यह स्थिति भयावह है। भारतकी एकताको छिन्न-भिन्न करनेकी विच्छेदक शक्तियोंका बल बढ़ाने वाला है। यह है श्रीमती गांधीका अपनी पार्टीसे विश्वासघात करने और अनिष्टकारी विनाशकारी कम्युनिष्ट पथ पर आंख मूंद सरपट भागने और भारत विरोधी कम्युनिस्ट पार्टीका हाथ

पकड़नेका भयंकर परिणाम ।

नागालैंड

नागालैंडकी शान्ति भी इस चुनावने हर ली । नागालैंडने नैशनल पार्टी (२३) और यूनाइटिड फ्रंट पार्टी (२५) इन दोनोंमेंसे कोई भी ६० सदस्योंकी विधानसभामें ३१ सीटें नहीं प्राप्त कर सका । अतः शासन स्थिरताका अन्त हो गया । ७ निर्दलोंकी सहायतासे श्री विजलने मंत्रिमण्डल बनाया है । ये सातों निर्दली मंत्री बनाये गए हैं। ६० सदस्योंमेंसे १५ मंत्रिमण्डलमें है । क्या विजल-मंत्रिमण्डल स्थायी हो सकेगा ?

भूमिगत विद्रोही नागाओंके साथ नये मंत्रिमण्डलका सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण है । सेनाका यह नागालैंडसे हटानेकी मांग करने वाली पार्टी है । यदि इसका पुराना रवैया कायम है तो कोहीमा नई दिल्लीके बीच टक्कर होनी अनिवार्य रूपसे सम्भव है । इस सम्भावनाके रहते नागालैण्डमें स्थिर शान्तिकी क्या आशा की जा सकती है ? अंग्रेजी शासनके संस्थापक श्री नेहरूने इस प्रान्तका नाम 'नागभूमि' या 'नागदेश' रखना स्वीकार नहीं किया, फलतः नागालैंड बैपटिस्ट चर्चसे शासित होता है ।

मणिपुर पुनः रपटनकी राह पर

संयुक्त पार्टीको भंग कर दिया । राष्ट्रपति के शासनके कारण २४ फरवरी १९७४ के चुनावमें कोई अन्तर नहीं आया । इन्दिरा-कांग्रेस कम्युनिस्ट बुरी तरह पराजित हुए । मणिपुर हिल्स-यूनियन और मणिपुर-पीपल्स पार्टीने कुछ निर्दलोंका समर्थन पाकर ६० सदस्योंकी विधानसभामें ३५ सीटें प्राप्त की हैं । श्री अलीमुद्दीन पुनः मुख्यमंत्री होंगे । प्रश्न यह है क्या कांग्रेस कम्युनिस्ट इस मणिपुरी एकताको कायम रहने देंगे ? इनकी सत्ता लालसा १९७३ के समान अमिट है, यदि बजट अधिवेशनमें उन्होंने तोड़-फोड़ शुरु की तो क्या पुनः मणिपुरमें राष्ट्रपतिका शासन स्थापित न होगा ? राष्ट्रपतिका शासन स्थिर शान्तिका द्योतक नहीं ।

चिन्ताकी बात यह है कि असमका मंत्रि-मण्डल डांवाडोल है । कछारकी लोकसभाका उपचुनाव इन्दिरा-कांग्रेस हार गई । यद्यपि पराजित उम्मीदवार असम मंत्रिमण्डलका एक मंत्री है । जीता मार्किस्ट कम्युनिस्ट । यह विजय आशंकाओंको जन्म देती है । दक्षिण भारतके समान सम्पूण पूर्वी भारतमें अशान्ति है । बंगाल में तो इन्दिरा-कांग्रेसमें ही यादवी युद्ध छिड़ा हुआ है । फरवरी १९७४ के चुनावने अशान्ति कारक तत्वोंका बल बढ़ाया है, घटाया नहीं है ।

श्रीमती नन्दिनी उड़ीसाकी नई विपत्ति है

उड़ीसाकी नई विधानसभाके सदस्योंकी संख्या १४७ है । बढ़ो जन-संख्याको देखते हुए यह संख्या १७५ होनी चाहिए थी । पर ऐसा होने नहीं दिया गया । क्योंकि फिर श्रीमती नन्दिनीका भाग्य भी चमक नहीं सकता था । कम्युनिस्ट सत्ता पर वंचित रहते । १४६ सीटों का निर्वाचन हुआ । श्रीमती नन्दिनी इन्दिरा कांग्रेसको खींचखांच कर ६९ तक पहुंचाने और मुख्यमंत्री पदका ताज पानेमें सफल हुई । पर यह ताज सात कम्युनिस्टोंकी पार्टीकी कृपा पर निर्भर है । श्रीमती नन्दिनीने गिरिजनों और महिलाओंके वोट प्राप्त करनेके वास्ते एक सप्ताह कड़ी मेहनत की । १९६१ के बाद

पहली बार कांग्रेस ६६ सीटें पानेमें सफल हुई हैं। पर इसका भारी मूल्य दिया गया है। भूमिहीनोंको भूमि देनेका वचन दिया गया है। यदि यह वचन पूरा न किया गया तो नन्दिनी मंत्रिमण्डलकी क्या गति होगी, यह प्रगति पार्टी के नेता श्री विजयानन्द पटनायक बता रहे हैं। अतः नवम्बर १९७४ में नन्दिनी मंत्रिमण्डल लुढ़कता नजर आए तो विस्मय न करना चाहिए।

प्रगति पार्टीकी आशा धूलमें मिल गई। उत्कल कांग्रेस ३३ और स्वतंत्र पार्टी २१ एवं सोशलिस्ट पार्टी २ सीटें ही प्राप्त कर सकीं। इन्दिरा-कांग्रेसके बोईंग जैट, एयरक्राफ्टों, हेलीकाप्टरों और जीपोंका मुकाबला प्रगति पार्टी नहीं कर सकी। इन्दिरा-कांग्रेसने अपने प्रत्येक उम्मीदवारको ४ जीपें दीं। इन चार जीपोंको एक मास चलानेका खर्चा ७६ लाख रु० होता है। इस प्रकार निर्वाचन क्षेत्रमें इन्दिरा-कांग्रेसने अन्यून प्रति क्षेत्र एक करोड़ रु० खर्च किया। उड़ीसा-विधानसभाके वास्ते इन्दिरा-कांग्रेसने १३५ उम्मीदवार लड़ाए। इस हिसाबसे कमसे कम १३५ करोड़ रु० यातायात, प्रचार साहित्य आदि पर श्रीमती गांधीने व्यय किया। इस १३५ करोड़ रु० की मार प्रगति-पार्टी नहीं सह सकी और दौड़में पीछे रह गई। स्वतंत्र पार्टी पहलेके समान ३१ सीटें नहीं हासिल कर सकीं। क्योंकि गिरिजनोंके इलाकेमें इन्दिरा-कांग्रस धन बलसे प्रवेश पाने और परम्परागत राजभक्ति नष्ट करनेमें सफल हुई। प्रगति-पार्टी बनाने वाले दलोंमें कार्य करनेमें एकीकरणका अभाव था। दूसरी ओर श्रीमती गांधीके तीन दौरोंने श्रीमती नन्दिनीके विरोधियोंको मिलकर चुनाव न लड़नेके लिए तैयार कर दिया। फलतः श्री विनायक आचार्यने श्रीमती नन्दिनीको विधानसभा पार्टीका नेता चुननेका प्रस्ताव किया। कांग्रेसके आन्तरिक मतभेदों पर प्रगति-पार्टीने जरूरतसे ज्यादा भरोसा किया। अतः वह विजयी होनेके बदले पराजित हुई। परन्तु इसके कारण उड़ीसामें शान्ति और स्थिरताका आगमन नहीं हुआ। श्रीमती गांधीने उड़ीसा और उ०प्र० में यह धमकी देकर वोट लिए हैं कि 'यदि कांग्रेसको नहीं जिताओगे तो केन्द्र विकास सहायता भी नहीं देगा।' श्रीमती इन्दिरा गांधीने भारतीयता और भारत राष्ट्रके शव पर खड़े होकर विजय प्राप्त की है। क्या यह शान्ति और प्रगति समृद्धि लानेमें समर्थ हो सकेगी? इसका विकल्प गुजरात है।

रेंगते सरकते पहुँच ही गए

उत्तर-प्रदेशकी विधान सभाकी ४२५ सीटोंमेंसे ४०४ सीटोंका चुनाव इन्दिरा-कांग्रेसने लड़ा था। शेष सीटें कम्युनिस्ट पार्टीके लिए छोड़ दी थी। रेंगते सरकते-सरकते इन्दिरा-कांग्रेस २१५ सीटों तक पहुंच पाई। १९६९ में श्री चन्दभानु गुप्त कांग्रेसको अपने बलसे २११ सीटों तक खींच ले गए थे। श्रीमती गांधीकी विजय कितनी नगण्य है, इससे स्पष्ट है। दिसम्बर १९७३ में उ०प्र० विधानसभामे इन्दिरा-कांग्रेसके सदस्योंकी संख्या २७२ थी। श्री बहुगुणाने मुख्यमंत्री बनकर ५७ सीटें खोई हैं, बढ़ाई नहीं। श्रीमती गांधी इस साधारण विजय पर गर्व करनेकी क्या अधिकारिणी है? कहां गया ३०० सीटें विजय करनेका दावा? कमसे कम ४०४ करोड़ रु० पानीकी तरह बहाकर केवल वह श्री चन्द्रभानु गुप्तको हरा

सकी हैं। ठीक है श्री चन्द्रभानु गुप्त प्रबल विपक्षी हैं। उनके शक्तिशाली रहते श्रीमती गांधी उ०प्र० की नेता नहीं हो सकती थीं। अतः महारथी अब धराशायी हो गया है। श्रीमती गांधीको उत्तरप्रदेशमें करारा जवाब देने वाला अब कोई नहीं रहा।

जनसंघका घमण्ड चूरचूर हो गया। इसने संयुक्त मोर्चा बनानेसे इन्कार कर इन्दिरा-कांग्रेसके वास्ते विजय-पथ प्रशस्त किया। जनसंघको गर्व है कि १९६९ में उसने ४४ सीटें प्राप्त की थीं और १९७४ में ६१ सीटें प्राप्त की हैं। पर वह भूल गया कि १९६७ में उसने ९८ सीटें प्राप्त की थीं। जनसंघने श्री अटल विहारी वाजपेयीके नेतृत्वमें मंत्रिमण्डल बनानेका स्वप्न संजोया था, वह धूलमें मिल गया। श्रीमती गांधीका कुशल नेतृत्व क्या इस बातमें है कि उन्होंने इन्दिरा-कांग्रेसके विरोधी दलोंको संयुक्त मोर्चा बनाने नही दिया। मँहगाई, अन्न-कष्ट, लोकतंत्र प्रणालीकी रक्षा इन तीन मुद्दों पर भी संयुक्त मोर्चा बनने नहीं दिया। विरोधी दल भी इन्दिरा-कांग्रेसके समान भारत भक्तिसे शून्य हैं। श्री चन्द्रभानु गुप्तकी पराजय इसी कुशल नेतृत्वका परिणाम है।

इन्दिरा-कांग्रेसकी शक्तिका यू०पी० में आधार ब्राह्मण वोट और हरिजन वोट हैं। स्त्री वोटोंको भी इसमें सम्मिलित कीजिए। कांग्रेसको प्राप्त २१५ सीटोंमेंसे ४९ हरिजन सीटें और १५ स्त्रियां हैं। शेष १५१ सीटें इन्दिरा-कांग्रेसने सामान्य वर्गसे पाई है। स्पष्ट है इन्दिरा-कांग्रेस सामान्य जनताकी पार्टी नहीं है। जनसंघका बल भी नगरों शहरों में क्षीण हो गया है। वहां वह अजेय नहीं रहा है। गांवोंसे इस हारकी पूर्ति सम्भव नहीं।

भारतीय क्रान्तिदल संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी और मुस्लिम मजलिस पार्टियोंका संयुक्त मोर्चा श्री चरणसिंहको १९६९ से कुछ ही आगे ले जा सका। १९६९ में भारतीय क्रान्ति-दलने ९८ सीटें जीती थीं। १९७४ में इस मोर्चे ने १०६ सीटें पाई हैं। कहा जा सकता है कि हरयाणाके मुख्यमंत्री चौ० बंशीलाल और उनके १००० सैनिकोंने चौ० चरणसिंहका अजेय समझे जाने वाला गढ़ मेरठ कमिश्नरी ढाह दिया। मुजफ्फर नगर जिलेकी भी सब सीटें चौ० चरणसिंह नहीं जीत सके। हरयाणा का हमला कितना प्रबल था, इसकी कल्पना १९७४ में इन्दिरा-कांग्रेसको मेरठ डिवीजनमें मिली सफलतासे आंका जा सकता है।

कम्युनिष्ट श्री दीपंकर भी चौ० बंशी-लालकी मदद पाकर ही जीते हैं। कम्युनिस्ट इस कारण चौ० बंशीलालके भारी स्तुति गायक हैं। मुख्यमंत्री चौ० बंशीलाल चौधरी चरणसिंहको तो धराशायी नहीं कर सके और श्रीमती गांधीका हरयाणाकी मदद बुलानेका मुख्य उद्देश्य पूरा नहीं हुआ, पर मेरठ डिवीजन की ४५मेंसे २४ सीटें दिलानेमें सफल हुआ। ये मिली अतिरिक्त १३ सीटें श्रीमती गांधीकी विजय द्योतक नहीं है। अतः श्री चन्द्रभानु गुप्तसे अब भी वह बहुत पीछे हैं। चौ० चरण-सिंह १९७४ में जाट नेता नहीं, किसान नेताके रूपमें उदित हुए हैं, यद्यपि १९६९ के स्तर पर नहीं पहुँचे हैं। श्री राजनारायणकी संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी भारतीय क्रान्तिदलका आश्रय ले अपनेको जीवित और शक्तिशाली बनानेमें

समर्थ हुई। श्री रामसेवक यादवके नेतृत्वमें २० सदस्य जीते हैं और श्री राजनारायणको पुनः राज्यसभामें पहुंचानेमें समर्थ होंगे। श्री फरनांडेज, लिमये, गौरेकी सोशलिस्ट पार्टी राजनारायणको समाप्त करनेके बदले स्वतः समाप्त हो गई। विधानसभामें उसके सदस्योंकी संख्या केवल पांच है। प्रजा सोशलिस्ट पार्टीके समान सोशलिस्ट पार्टी भी यू०पी० से अन्तर्धान होने के पथ पर है। श्री राजनारायणके कुशल नेतृत्व का यह परिणाम है। यद्यपि १९६९ के समान नहीं है। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टीने १९६९ में ३८ सीटें जीती थीं।

सिण्डीकेट कांग्रेस श्री चन्द्रभानु गुप्तकी पराजयसे मूर्च्छित हो गई है। यद्यपि विधानसभामें उसकी शक्ति १० है। पर यह मूर्च्छा अस्थायी है। कण्ट्रोल हटाने, अनाजका पहले के समान बेरोक टोक खुला व्यापार जारी करनेकी आवाज उठाने पर यह पार्टी पुनः जी उठेगी। यदि यह अंग्रेजीको हटानेका प्रबल हुँकार डा० लोहियाके समान करे तो यह इन्दिरा-नेतृत्वको समाप्त कर सकती है। १९६७ में डा० लोहियाने 'अंग्रेजी हटाओ' का नारा दिया था। इसका फल क्या हुआ, शिक्षा-राज्यमंत्री श्री भगवत झा आजाद जेबमें स्तीफा डालकर घूमते थे और कहते थे यदि विश्वविद्यालयोंमें शिक्षाका माध्यम हिन्दीको न बनाया गया तो वह स्तीफा दे देंगे। श्रीझाने अनेक विश्वविद्यालयोंमें छात्रोंकी हड़ताल करवाई। पर डा० लोहियाकी मृत्युके साथ कांग्रेसियोंका भारत प्रेम हिन्दी प्रेमका उबाल भी बासी कढ़ीके समान शान्त हो गया। १९७४ में किसी पक्षने अंग्रेजी शासनका अन्त करनेका बीड़ा नहीं उठाया। श्री राजनारायण भी मौन रहे। फल सामने है। १९७४ के चुनावने अंग्रेजी शासनका बल बढ़ाया है। भारतीयताकी शक्ति क्षीण की है! भारत भक्तिकी ज्योति प्रबल नहीं हुई। श्रीमती गांधीने जातिवाद बढ़ाया। हरिजनोंमें चमारों, जाटवोंको फोड़ा। भारतीय जनताकी एकताको छिन्न विच्छिन्न करनेमें कुछ नहीं उठा रखा। मुस्लिमोंकी खुशामदमें श्रीमती गांधीने भारत को इस्लामीस्टेट तक घोषित किया और इस इस्लामी स्टेटकी उर्दू सेक्युलर भाषा घोषित किया। प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधीने जनवरी फरवरी १९७४ दो मासोंमें भारत राष्ट्रका अस्तित्व तक मिटानेमें कुछ उठा नहीं रखा। अंग्रेजी इन्दिरा-शासन इस प्रकार स्थिर किया।

मध्यम वर्गको मिटानेका १९७४-७५ का बजट

रेलवे बजटने किराया और भाड़ा बढ़ाकर १३६ ३८ करोड़ रु० का नया कर भार सामान्य जनता पर नया अमित भार लादा है। यात्रियों की संख्या घटानेके उद्देश्यसे रेलवे मंत्रीने किराया बढ़ाया है, भाड़ा बढ़ाया है, अंग्रेजी शासनको दृढ़ करनेके लिए। अंग्रेजीका राज्य रहते रेलवे, डाक, तार, फोन और सेना एवं पुलिस अपना खर्च घटानेकी बात सोच ही नहीं सकते। वेतन ढांचामें परिवर्तन अंग्रेजी राज्य के बने रहते सम्भव नहीं। अतः केन्द्रीय सरकार के वेतन बिलमें २०० करोड़ रु० की हर साल वृद्धि भी जरूरी है। श्रीमती इन्दिरा गांधी मूर्तिमान अंग्रेजी-मुस्लिम शासन है। इनके प्रधानमंत्री रहते हुए २१२ करोड़ रु० का नया कर भारका भारी बोझ पेटसे सट रही जनता

की कमर पर लादनेके बाद भी १२५ करोड़ रु० का घाटा बना रहेगा। घाटेकी वित्तीय व्यवस्था बनी रहेगी। यह है, अंग्रेजी शासनका अभिशाप। शासन व्यय घटाकर एक चौथाई किए बगैर घाटेकी वित्तीय व्यवस्थाका अन्त सम्भव नहीं। विकास व्ययको पूरा करनेके लिए हर साल २०० करोड़ रु० का नया कर लगाना और दरिद्र जनताको शान्ति सुखकी एक सांस तक लेनेका अवसर न देना भी जारी रहेगा। सरकारी उद्योग आर्थिक विकासकी प्रगतिको बढ़ानेके बदले उसको रोक रहे हैं और दरिद्रताको बढ़ा रहे हैं। कर भार हर साल किस सीमामें बढ़ाया जा रहा है, इसकी झांकी नीचे देखिए—

अतिरिक्त वार्षिक कर भार

(करोड़ रु० में)

१९६७–६८	१६३
१९६८–६९	१११
१९६९–७०	२४२
१९७०–७१	१७०
१९७१–७२	५००
१९७२–७३	१८३
१९७३–७४	२९२
१९७४–७५	२१२
योग	१८७३

भविष्यके निर्माणके नाम पर श्रीमती इन्दिरा गांधीके आठ सालके शासन कालमें १८ अरब ७३ करोड़ रु० का अतिरिक्त कर भार डाला गया है। इस पर भी भ्रष्ट अक्षम निकम्मा इन्दिरा शासन घाटेकी वित्तीय व्यवस्थाका आश्रय लेनेको वाध्य हुआ। यथा—

बजटका कुल घाटा

(करोड़ रु० में)

१९६७–६८	२३७
१९६८–६९	३१३
१९६९–७०	४३
१९७०–७१	४२४
१९७१–७२	७३८
१९७२–७३	६८०
१९७३–७४	६५०
१९७४–७५ (बजट)	१२५
योग	३२१०

इन्दिरा-शासन-कालमें ३२ अरब १० करोड़ रु० का घाटा जनता पर डाला गया है। यह है, भारतको विभक्त रखने और अंग्रेजी शासनको दृढ़ रखनेका भारी दण्ड। श्रीमती गांधीने जनताको तो कुचल दिया है। वह बोल भी नहीं नकती। मध्यम वर्ग शोर करता है। इलाहाबादमें रेलकी पटरी पर बैठकर पुलिस की गोली खाता है, ८०० जेल भी गए हैं। इस वर्गको कुचलने, दीनहीन बनानेके लिए १९७४-७५ के दो बजट हैं। १९७३-७४ में २७ प्रतिशत मंहगाई बढ़ी और दरिद्र-वर्ग पामाल हो गया। १९७४-७५ में अन्यून ५० प्रतिशत मंहगाई बढ़ेगी। और मध्यम-वर्गका जीवन सुन्न हो जायेगा। यह आन्दोलनकारी, कोलाहलकारी वर्ग मूक हो जायेगा या फिर सारे देशको घोर निराशामें गुजरात बना देगा। मरता क्या नहीं करता। भारत-विभाजन, भारतको विभक्त रखने एवं अंग्रेजी शासनको दृढ़ करनेका यह भारी अमंगलमय-अभिशाप है। प्रश्न यही है क्या इस घोर निराशा अन्धकारमें श्रीरामकी यह वाणी उद्दीप्त हो, भारत

गगनमें व्याप्त होगी ?

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

इसका स्मरण ही रूसी नये हमलेसे भारत की रक्षा कर सकता है।

कोई आशा नहीं

१९७४-७५ के बजटमें ऐसी कोई आशाकी किरण नहीं, जिसमें कहा जा सके कि आर्थिक विपत्तिका अन्त निकट भविष्यमें सम्भव हो। कुछ खर्चोंको देखिए :—

(करोड़ रु, में)

	१९७३–७४	१९७४–७५
ऊर्जा विकास	८६.१५	४५.०४
कृषि	२७६०	२४६.०
केन्द्रीय नियोजन	२८६.२	२७६.५

क्या इन मदोंकी राशिको देखकर कहा जा सकता है कि इन्दिरा-सरकार अव्यवस्था, अराजकता और अशान्तिको दूर करनेको उत्सुक है ? उत्पादन बढ़े बगैर क्या संकट मिट सकता है ? १९७४-७५ के बजटमें क्या कोई प्रयत्न उत्पादन बढ़ानेके लिए किया गया है ? ऊर्जा विकासके मदमें दी गई राशि क्या प्रमाणित करती है ?

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

नया वर्ष आतङ्क अशान्ति और अविश्वास बढ़ाने वाला है

विश्वशान्ति सम्भव नहीं, संसारके अन्नोत्पादनमें कमी होगी

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

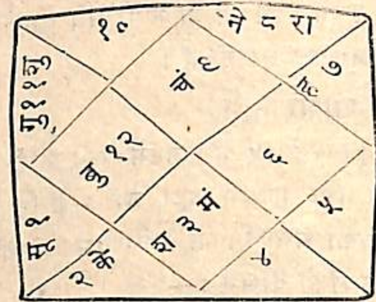
[चैत्र शुक्ला प्रतिपदा रविवार दि० २४ मार्च १९७४ से प्रवेश होने वाले नये विक्रमी वर्ष २०३१ में भारत और विश्वमें होने वाली प्रमुख घटनाओंका उल्लेख हमने अपने नये वर्ष २०३१ के 'श्रीविश्वविजयपंचाङ्ग' में उक्त शीर्षकसे पृष्ठ २४ से ३२ तक विस्तृत रूपमें किया है। यह पंचांग गत नवम्बर ७३ में प्रकाशित हो चुका था। पृष्ठ ३० पर उत्तरप्रदेशके महानिर्वाचन संग्रामके विषयमें स्पष्ट भविष्यवाणी इस प्रकार की गई थी—**"अब इस वर्ष १९७४ के चुनावमें एड़ी चोटीका जोर लगाकर भी सत्ताकांग्रेस गत लोकसभा और विधानसभा चुनावों जैसी सफलता कदापि प्राप्त न कर सकेगी। मुश्किलसे ४५ प्रतिशतके लगभग सफलता मिल सकेगी। परंतु अन्य दलोंका संगठन न होनेसे अजेय बहुमत माना जावेगा और मंत्रिमण्डल सत्ताकांग्रेसका ही बनेगा।"** तदनुसार उत्तरप्रदेशमें जो कुछ हुआ वह पाठकोंके सामने स्पष्ट है। स्थानाभावके कारण पंचांगकी वर्ष भरकी भविष्यवाणी यहां प्रकाशित नहीं की जा सकी। २६वें पृष्ठके प्रारंभिक कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक]

"राजसत्ता कारक अधिनायक सूर्य और प्रजातन्त्रका अधिनायक शनि माना गया है। इस वर्ष राजा मंत्रीमें पारस्परिक संघर्ष है। जगल्लग्नमें अष्टमेश चन्द्रमा लग्नमें और सप्तम भावमें मंगल शनिका योग संसारके लिए सुख-शान्तिकारक नहीं माना जावेगा। मंगल अधिनायकतन्त्र या डिक्टेटर शिपका प्रतिनिधि है। क्रान्ति रक्तपात मारधाड़ दुःसाहस और सैनिक प्रवृत्तिका द्योतक भी है। शनि श्रमजीवियोंका अधिपति है। उत्पात षड्यन्त्र प्रतिशोध और दूरगामी परिणाम प्रदाता है। इन ग्रहयोगोंको देखते हुए विश्व-

शान्तिकी आशा खपुष्पायित ही समझना चाहिए। शक्ति-सम्पन्न बड़े राष्ट्र विश्वशान्ति के नक्राश्रु खूब बहायेंगे, परन्तु हृदयसे दूसरेका उत्कर्ष नहीं चाहेंगे। स्वार्थान्ध होकर सभी उन्मत्तसे दिखाई देंगे। मंगल शनि दोनों युद्ध विग्रह कारक हैं। "युद्धदौ शनिमाहेयौ" ये जगलग्नसे सप्तममें पड़े हैं अतः संसारके कुछ भागमें जून मासमें (ग्रहणके आसन्न) राज्य-क्रान्ति वा युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। एशिया महाद्वीप इसकी लपेटमें आवेगा। हिन्दमहासागरको शान्तिक्षेत्र बनाये रखनेके प्रयत्न विफल होंगे। वैशाख ज्येष्ठ मासमें कहीं भयंकर अग्निकाण्ड, यान-दुर्घटना, भूकम्प वा आँधी तूफानसे भी हानि होगी। भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, अफ्रिका, अमेरिका, श्रीलंका, वर्मा, नेपाल, मिश्र, तुर्की और ईरानमें कुछ अप्रत्याशित घटनाएं घटेंगी। श्री निक्सन, श्री सादात माओत्से तुंग और श्री भुट्टोके लिए यह शनि-मंगल योग आगे अनिष्टकारी सिद्ध होगा। आगे इस वर्षके उत्तरार्धमें दिसम्बरके दोनों ग्रहणोंके लगभग संसारमें पुनः कहीं अशान्ति भड़केगी। कहीं गृहयुद्ध, कहीं मंत्रि-मण्डलका पतन, कहीं हत्याकाण्ड, भूकम्प वा महामारी आदिसे विनाश होगा। कुछ महाप्राण दुर्घटनाग्रस्त होंगे। यूरोप पश्चिमी एशिया और मध्य-पूर्वके कुछ भागोंमें भी अराजकता व्यापेगी। कहीं-कहीं सशस्त्र क्रान्ति और कहीं संवैधानिक षड्यंत्रसे सत्ता हथिया ली जावेगी। अतः ज्योतिषकी दृष्टिसे कहा जा सकता है कि विश्व-युद्धका बीज इस वर्ष २०३१ वि० के उत्तरार्धमें बोया जावेगा। ६ वर्ष बाद यह विषवृक्ष पनपकर सन् १९८०-८१ में फल देना प्रारंभ करेगा, जैसाकि हम गत वर्ष भी लिख चुके हैं।"

नये वर्षकी जगत्-लग्न कुण्डली



भीड़तन्त्रसे सावधान

गत २६ जनवरी ७४ से प्रवेश होने वाले गणतन्त्रके २५वें वर्षका भविष्य गताङ्क और 'विश्वविजयपंचांग'में प्रकाशित किया जा चुका है। उसमें भीड़तन्त्रसे सावधान रहनेकी चेतावनी दी गई थी। कुछ पाठक 'भीड़तन्त्र'का अर्थ नहीं समझ पाये, उनके पत्र आये, अतः इस शब्दका अर्थ यहां स्पष्ट कर देते हैं। भारतमें इस समय 'जनतन्त्र' या लोकतन्त्र-राज्य है। जनतन्त्रका अर्थ है प्रबुद्ध जनता द्वारा नियम व्यवस्था एवं अनुशासनमें रहते हुए रचनात्मक ढंगसे राज्यव्यवस्था चलाना और 'भीड़तन्त्र' का अर्थ है अबुद्ध क्रुद्ध जनता द्वारा अव्यवस्था अनुशासन हीनता अशान्ति फैलाकर विध्वंसक कार्य करना। जनतन्त्र विकासका मार्ग है और भीड़तन्त्र विनाशका। पश्चिम भारत गुजरातमें गत दो माससे भीड़तन्त्रकी क्रोधाग्निसे जन धनका भीषण विनाश हो रहा है। अन्य पड़ौसी प्रान्तोंमें यह दावानल न फैले इसके लिए जनतन्त्रको विवेकसे काम लेना चाहिए, अन्यथा परिणाम भयंकर होगा। उच्च सत्तासीन नेता राष्ट्रीय प्रश्नको अपनी प्रतिष्ठाका प्रश्न बनाकर खिलवाड़ करते हैं। इनके इस प्रज्ञापराध से राष्ट्रकी अपार हानि हो जाती है तब

उनकी आंखें खुलती हैं। गुजरात विधानसभा जितनी जल्दी भंग कर दी जावेगी उतना ही जनधनका विनाश कम होगा । ग्रहयोगसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रधानमंत्री चाहे भले ही न चाहे पर इस वर्षके अन्तके साथ ही (२३ मार्च ७४ से पहले) गुजरात विधानसभाका अन्त भी अवश्यम्भावी है। नये वर्ष २०३१ वि० में बिहार बंगाल महाराष्ट्र मैसूर म०प्र० उत्तरप्रदेशमें भीड़तन्त्रकी गतिविधियां बढ़ेंगी। सावधान ! ११ मार्च ७४ को ये पंक्तियां लिखी गई हैं।

श्री रमणका मत

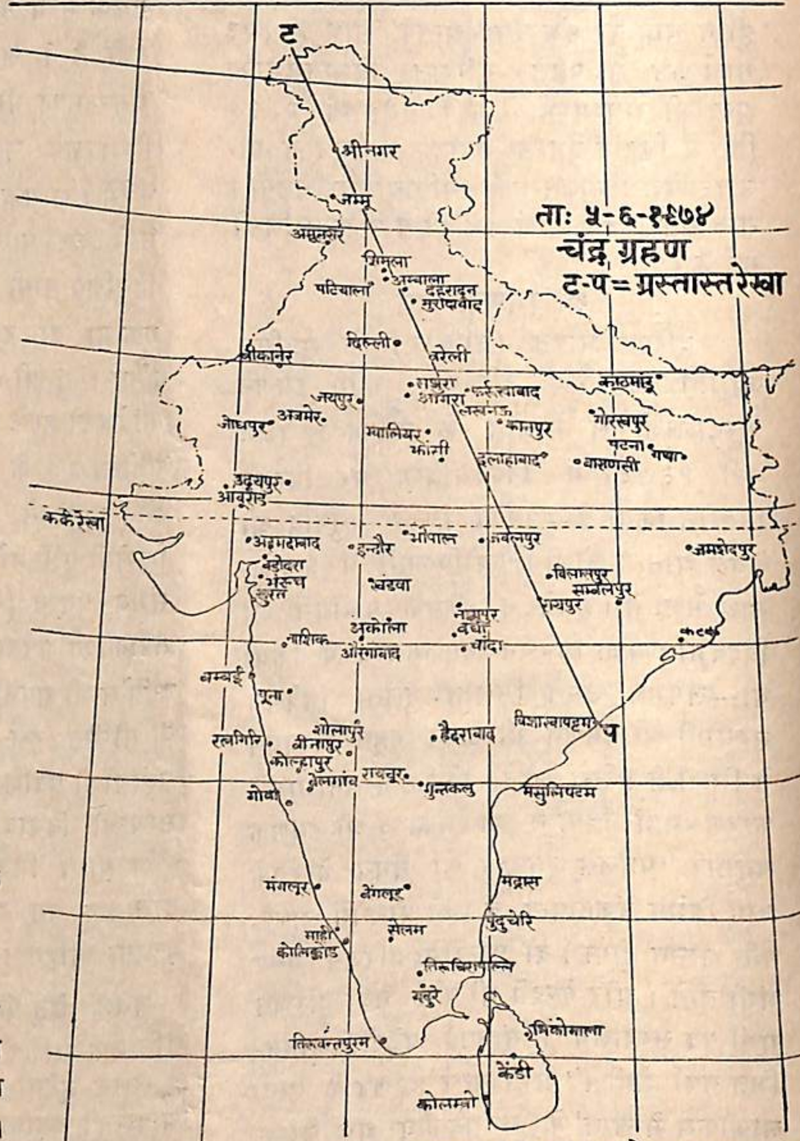
दक्षिण भारत (बंगलोर) के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्री बी० व्ही० रमणने 'एस्ट्रालाजीकल मेग्ज़ीन' के वार्षिकाङ्क (जनवरी १९७४) में विश्वभविष्य पर विस्तृत विवेचन किया है—उसका हिन्दी अनुवाद श्री केवल आनन्द जोशीने 'ज्योतिष्मती' में प्रकाशनार्थ भेजा है। हमने नये वर्षके पंचांगमें जो विश्वभविष्यका विवेचन गत सितम्बरमें किया था—लगभग उससे मिलता जुलता विवेचन सहयोगी श्री रमणने भी अपने गहन अध्ययन से लिखा है। लेख लम्बा होनेसे स्थानाभावके कारण यहां दिया न जा सका । श्री रमणके अनुसार "अप्रैलसे जून ७४ का समय भारतके लिए विशेष संकटापन्न है। दो प्रान्तोंमें राष्ट्रपति शासन होगा। दो प्रान्तोंमें हरिजन मुख्य मंत्री होंगे। और केन्द्रमें भी कोई नया हरिजन मंत्री पद सम्हालेगा। मंहगाई बढ़ेगी, अनियमित वर्षा होगी।" अभी मार्च १९७४ के 'एस्ट्रालाजीकल मेग्ज़ीन' के सम्पादकीय अग्र लेखके अन्तमें श्रीरमणने २० जून ७४ को भारतसे बाहर होने वाले खग्रास सूर्यग्रहणका फल विवेचन करते हुए जो पंक्तियां लिखीं उसका हिन्दी रूपान्तर इस प्रकार है—

"२० जून ७४ को मिथुन राशि ७° में राहुके तारा समूहमें एक पूर्ण सूर्यग्रहण होगा। यह हमें बताता है कि अप्रेल ७४ से जून ७४ तकके मध्य का समय भारतके लिए अनुकूल नहीं है । खाद्यान्नोंकी कमीसे भीं जनतामें असुरक्षाकी भावना बढ़ेगी, तथा शासक इनके निवारणके उपयुक्त उपायों पर विचार ही करेंगे। शासक इन कठिनाइयोंका ठीक निवारण नहीं कर पाएंगे । कठिनाइयोंकी आशंका द्विगुणित होगी। राजनैतिक अस्थिरताके कारण एक या दो राज्योंमें राष्ट्रपति शासन लागू होगा। यू०पी० और उड़ीसाके उपचुनावोंमें कांग्रेसको हल्के झटके खाने पड़ेंगे। तीन अशुभ ग्रहोंका ९° के वृत्तखण्डमें एकत्रित होना कानून तोड़ने वालोंको बढ़ावा देगा और विरोधी पार्टियाँ केन्द्रको तंग करनेके लिए हर संभव प्रयत्न (संवैधानिक और असंवैधानिक तरीकोंको अपना कर) करती रहेंगी। शासक-कांग्रेस भी अपनी शक्तिको केवल नारों तक ही सीमित रख सकेगी और अपने नेतृत्वके उद्देश्योंको प्रदर्शित नहीं कर पाएगी। भाषा सम्बन्धी विवाद उठेंगे, अतः केन्द्रको दृढ़तापूर्वक सीमा विवादों पर अपने निर्णयका दबाव डाल कर धन और जीवनको नष्ट होनेसे बचाना चाहिए।

जैसे ही केतु पीछे हटकर वृषभ राशिमें और शनि कर्क राशिकी ओर बढ़ेगा कुछ वस्तुओं पर से राशन हटेगा और कुछ सीमा तक खुले व्यापारको बढ़ावा मिलेगा । भारतको सबसे उपयोगी दश वर्ष आगे आ रहे हैं और शनिके कर्क राशिमें प्रवेश (सन् १९७५ में) करनेके साथ ही भारत एक निश्चित उद्देश्य प्राप्त कर लेगा तथा स्थिरता और शांतिके चिह्न दृष्टिगोचर होने लगेंगे।"

खण्डग्रास चन्द्र-ग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]



ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा मंगलवार दिनांक ४-५ जून सन १९७४ ई० को अर्धरात्रिके बाद स्टेण्डर्ड टाइमसे २ बज कर ९ मिनट पर प्रारम्भ होकर प्रातः ५-२३ तक समस्त भारतमें खण्डग्रास चन्द्र-ग्रहण दिखाई देगा। यह चन्द्र-ग्रहण उत्तरी भागको छोड़कर सम्पूर्ण एशिया, आस्ट्रेलिया, हिन्दमहासागर, दक्षिणी यूरोप में, अफ्रिका दक्षिण अमेरिका के पूर्वीतट, दक्षिण अतलान्तक महासागर और दक्षिणी ध्रुव में भी दिखाई देगा। पूर्वी भारतमें बंगाल बिहार असम उड़ीसा नेपाल पूर्वी उत्तरप्रदेश और पूर्वी मध्यप्रदेश कलकत्ता प्रयाग वाराणसी, कानपुर, पटना, गया, हरिद्वार, लखनऊ मुरादाबाद, बरेली, रायपुर म०प्र० बिलासपुर आदि नगरोंमें यह चन्द्रग्रहण ग्रस्तास्त होगा। अर्थात् मोक्षसे पहले कुछ ग्रहण लगा हुआ चन्द्रमा अस्त हो जावेगा। श्रीनगर (काश्मीर) सोलन शिमला अम्बालामें ठीक मोक्षकालके समय चन्द्रमा अस्त होगा अतः यहां ग्रस्तास्त नहीं माना जावेगा। ऊपर भारतके मानचित्र (नक्शे) में ट-प रेखा ग्रस्तास्तकी है। इस रेखासे पूर्वके नगरोंमें ग्रस्तास्त मानना चाहिए। रेखासे पश्चिममें दिल्ली पंजाब हरियाणा राजस्थान मध्य-प्रदेश, उत्तर-प्रदेश आंध्र महाराष्ट्र गुजरात केरल कर्नाटकमें ग्रस्तास्त नहीं है। वहां ग्रहण मोक्षके बाद चन्द्रमा अस्त होगा।

इस चन्द्र ग्रहणका स्पर्शादिकाल भारतीय स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार अर्धरात्रिके बाद ५ जून १९७४ को निम्नाङ्कित है—



	घं० मि०
स्पर्श रात्रि	२—९
मध्य ,,	३—४६
मोक्ष प्रातः	५—२३

पर्वकाल—३ घंटे १४ मिनट का है।

ग्रहण वेध—इस ग्रहणका वेध (सूतक) दि० ४ जून मंगलवारको सायंकाल ५-९ से लगेगा। सूतकमें धार्मिक जन भोजनादि न करें।

दि० ४ जूनको अर्धरात्रिके बाद १२-५४ से आकाशमें निर्मल पूर्ण चन्द्र-बिम्ब कुछ निस्तेजसा होने लगेगा। इसे मांद्य-स्पर्श कहते हैं। बालबृद्ध रोगी अशक्तजन मांद्य-स्पर्श तक पथ्य सेवन कर सकते हैं।

ता० ५ जून ७४ का चन्द्रग्रहण जहां ग्रस्तास्त होगा वहांके कुछ प्रमुख नगरोंका चन्द्रास्त काल भारतीय स्टेण्डर्ड टाइमसे नीचे दे रहे हैं। पहले कालममें चन्द्रास्तका स्टेण्डर्ड टाईम और आगे दूसरे कालममें स्पर्शसे चन्द्रास्त तक पर्वकालके घंटे मिनट हैं।

नगर	चन्द्रास्त	पर्वकाल
	घं०—मि०	घं०मि०
अम्बाला	५—२३	३—१४
अगरतल्ला	४—४१	२—३२
इम्फाल	४—२७	२—१८
कलकत्ता	४—५६	२—४७
कटक	५-१०	३—१
कानपुर	५—२०	३—११
काठमांडू नेपाल	४—५७	२—४८
कोहिमा	४—२५	२—१६
गोहाटी	४—३४	२—२५
गंगटोक	४—४४	२—३५
थिम्फू	४—३८	२—२९
डिबरूगढ़	४—१८	२—९
ढाका (बंगला देश)	४—४५	२—३६
देहरादून	५—२१	३—१२
दार्जिलिंग	४—४६	२—३९
नैनीताल	५—१८	३—९
पटना	५—२	२—५३
प्रयाग	५—१६	३—७
पोर्टब्लेयर	४—५९	२—५०
भुवनेश्वर	५—११	३-२
रंगून	४—३५	२—२६
लखनऊ	५—१७	३—८
वाराणसी	५—१२	३—३
शिलांग	४—३४	२—२५
शिलीगुड़ी	४-४६	२—३७
शिमला	५—२३	३-१४
हरिद्वार	५—२२	३—१३

ग्रहणका राशिफल—यह चन्द्र-ग्रहण मिथुन, कन्या, मकर, कुम्भ राशि वालोंको शुभ है। वृषभ, कर्क, तुला, मीन राशि वालोंको मध्यम और मेष, सिंह, वृश्चिक, धनुः राशि एवं ज्येष्ठा जन्मनक्षत्र वालोंको चिन्ता भय रोग शोक व्यर्थ व्यय आदि नानाविध नेष्ट फलदायक रहेगा, अतः इन अशुभ राशि वाले जन ग्रहण दर्शन न करें। इस ग्रहणका विशेष फल 'श्रीविश्वविजयपंचांग'में दिया है।

❀

कुम्भमहापर्व हरिद्वार

इस नये वर्षके प्रारम्भमें वैशाख मासमें हरिद्वारमें द्वादशवर्षीय कुम्भ महापर्वका विशाल मेला लग रहा है। गत शिवरात्रिसे ही सन्त महान्त-मण्डल और श्रद्धालु सज्जन भगवती भागीरथीके पावन तट पर हरिद्वार पहुंचने लगे हैं। यह अङ्क पाठकोंके हाथोंमें पहुँचने तक कुम्भपर्वके प्रारम्भिक चार स्नान (१ महाशिवरात्रि, २ वारुणीपर्व, ३ शनैश्चरी अमावस्या और ४ नववर्ष प्रतिपदा) हो चुकेंगे। श्रीरामनवमी और चैत्री पूर्णिमाके अनन्तर कुम्भमहापर्वका मुख्य स्नान मेष संक्रान्तिके पुण्यकालमें वैशाख कृष्णा ७ रविवार दि० १४ अप्रैल १९७४ को प्रात:कालमें होगा।

वैशाख वदी ७ शनिवार दि० १३ अप्रैलको रात्रिके १२।४६ पर सूर्य मेष राशिमें प्रवेश करेंगे। अत: शनिवारकी अर्धरात्रिके उपरान्त पुण्यकाल प्रारम्भ होनेसे कुम्भ स्नान १४ अप्रैलको होगा। पंजाबियोंका वैशाखी मेला १३ अप्रैलको होगा। सोमवती अमावस्या २२ अप्रैलको कुम्भपर्व का अन्तिम स्नान होकर मेला विसर्जन होने लगेगा। अक्षय तृतीया २५ अप्रैलसे श्रद्धालु यात्री श्री बदरीकेदार यात्रा प्रारम्भ करेंगे।

"कुम्भपर्वका ऐतिहासिक सामाजिक धार्मिक महत्व और यात्रियोंका कर्तव्य" शीर्षक एक निबन्ध हमने सं० २०३१ के 'श्रीविश्वविजयपंचांग'में पृष्ठ ७७,७८,७९,८० पर लिखा है वहां देखें।

धर्म-प्रचार-सभा सत्सङ्ग-सम्मेलनोंकी धूम

इस महामेलेमें प्राय: सभी सम्प्रदायके धर्माचार्योंके छोटे-बड़े अनेक प्रचार-शिविर (कैम्प) लगे हैं, जिनमें अहर्निश सत्सङ्ग कथाकीर्तन प्रवचनोंका प्रवाह उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। कई स्थानों पर अन्न-क्षेत्र लङ्गर भी लगे हैं। सप्तसरोवर मार्ग पर स्वामी प्रेमबापूजी महाराजके कैम्पमें भी श्रीमद्भागवत कथा कीर्तन सत्सङ्ग और लंगर (भण्डारा) २२ मार्चसे २२ अप्रैल तक चालू रहेगा। श्रद्धालु धार्मिक धनी सज्जनोंको अन्नदान और धर्मसेवामें सहयोग देकर पुण्योपार्जन करना चाहिए। श्रीसनातन-धर्मप्रतिनिधि सभा पंजाबके शिविरमें ज्योतिषसम्मेलनका आयोजन भी किया गया है। ऐसे ही अनेक सम्मेलन होंगे।

कुम्भ पर्व हमारे सामाजिक संगठनके साथ भौगोलिक ऐक्यका भी प्रतीक है। धर्म, समाज, आदि अनेक दृष्टियोंसे तो यह महान् राष्ट्र सदासे एक रहा ही है। साथ ही भौगोलिक भेद भावको भी इसने कभी स्वीकार नहीं किया। इसलिए काश्मीर सरीखे उत्तरीय प्रान्तोंका निवासी गोदावरी तक दक्षिणमें सहर्ष पहुंचता है। उधर दक्षिणमें कन्याकुमारी एवं रामेश्वरमें रहने वाला भारतीय भाई उत्तरमें अवस्थित राष्ट्रके रक्षक प्रहरी हिमालयके पावन पाद-पद्मोंको छूकर तथा पतितपावनी गंगा माताका पय: पान कर उसकी गोदमें बैठकर अपने दोनों लोक बना लेता है। इस प्रकार कुम्भ पर्व सामाजिक एकताके साथ ही साथ भारतकी भौगोलिक एकताका भी प्रत्यक्ष प्रतीक प्रमाणित होता है। हमारे पूर्वजोंने किसी भी कार्यमें संकीर्ण दृष्टिसे विचार नहीं किया। वे प्रत्येक परिस्थिति और कार्य पर व्यापक विचार करते थे। उनके जीवनके प्रत्येक क्षणमें धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक भावनाओंका समन्वय रहता था। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों ही उनके जीवनके लक्ष्य रहे हैं। कुम्भपर्व भी इन चारोंके पूरक प्रयत्न हैं।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

१२ को अन्न तेज। पू०भा० का शुक्र वर्षाकारक है। वर्षा होनेपर अन्न मंदा, रुई तेज। शनिवारी १३ गुड़ खाण्ड, सोना ताम्बा लाल रंगके पदार्थ लाख चपड़ामें तेजी करेगी। आज ही शनि मंगलका युद्ध पश्चिमी मुस्लिम राष्ट्रोंमें रोगोत्पत्ति युद्ध तथा अकालसे कष्ट होगा। वैशाख वदी अमावस्या सोमवारी मन्दी कारक है। परन्तु अश्विनी नक्षत्रका फल मध्यम है। मीनका बुध पूर्वमें अस्त होगा लड़ाई-झगड़ा युद्धके अतिरिक्त अनाजमें हानि होनेसे गल्ला तेज हो सकता है। सुदी १ भौमवारको चन्द्रोदय लाल रंगकी वस्तुओंमें तेजी लायेगा। अक्षय तृतीया गुरुवारी है। भड्डुली कहते हैं "अखै तीज तिथिके दिना गुरु होवे संजूत। तो भाखै यों भड्डरी उपजै नाज बहूत।" आज रोहिणी नक्षत्र भी है। सवत्का एक पाया मजबूत हो गया है। वदी ६ का क्षय तेजी कारक है। सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली तिलहन तेल लोहा गल्ला तेज। भरणीमें रविः, तिलहन, लालमिर्च गुड़ खाण्ड घी, सोना, ताम्बा पीतल हल्दी तेज करेगा। अष्टमी मीने शुक्रः प्रजामें सुख शांति, रुई, कपास, चांदी जौ गेहूँ चणा आदिमें मन्दी।। नवमीको धातुएं तथा रुईमें तेजीका झटका आएगा दोपहर बाद मघा नक्षत्र खेतीमें हानि करेगा।

ता० १ मई बुध सूर्यका संयोग गल्ला तेज करेगा। परन्तु बुध अस्त है। ता० २ को अनाज गेहूँ जौ, चणा बाजरा मूंग मोठ गुड़ नमक चांदी, सोनामें मन्दीकी धारणा रहेगी। ता० ४ शनिवारी १३ लाल रंगके पदार्थ गुड़ सोना आदि तेज करेगी। सुदी १४ रविवारी वर्षाऋतुमें उत्तम वर्षाकी सूचना देती है। सोमवारी पूर्णिमा मन्दीकारक है। आज रुई सूत कपास सनमें अच्छी मन्दी होगी। विशाखा नक्षत्र बहुत कम होनेसे आगामी पक्षमें मन्दीकी आशा कम है। इस मासमें किसी प्रांतमें मंत्रीमंडल भंग होगा, जनरल लाइन तेजीकी रहेगी।

ज्येष्ठ मास

वदी १ मंगलवार सरसों, अलसी तिल तेलमें तेजी और सोना चांदी रुईमें घटबढ़ होगी। ता० ८ मईको बाजार तेजीमें खुलेगा, बादमें मन्दीका रुख हो जावेगा। ९ मई वृषे बुध उत्पात कारक है। रुई मन्दी होकर तेज गल्ला तेज १० मई रुई, सूत पाट बारदाना सोना चांदी पीतल मन्दा, ११ को कृत्तिकाका सूर्य, गेहूँ गुड़ चावल तेज करेगा। रविवारी षष्ठी गल्ला और घी तेज करेगी। पुनर्वसौ भौमः चांदी रुई सूत सन नमक गल्ला तेज। पशुओंमें रोग। १३ मईको कुछ भाव गिर जायेंगे। १४ मई मंगलवारी वृष संक्रांति है। फल रुई तिल तेल ईख गुड़ खाण्ड आदि तेज करेगी। खेतीमें हानि होगी। ता० १५ की रात्रिमें पश्चिममें बुधका उदय वर्षाकारक है। सोना, चांदी, रुई कपास, गुड़ गेहूँका भाव मन्दा होगा। १६ मई शतभिषा वृद्धिसे गेहूँ, चणा, बाजरा, जौ, जुवार गुड़ खाण्ड मन्दी। १७ को दसमीकी वृद्धि तीन दिन तक हर एक वस्तुमें तेजीका झटका लायेगी। १९ मई सरसों, अलसी, एरण्डा, सींगदाना तिल तेल लोहा जस्ता मशीनरी तेज। वदी १२ रविवारी रेवती नक्षत्र वर्षामें कमी तथा रोगकारक है। दशमीकी वृद्धि और त्रयोदशी क्षय होनेसे मन्दीके झटके आएँगे। अमावस्या मंगलवारी होनेसे घोर तेजीकारक

खर्पर योग बन गया है । यहां पर हर एक वस्तु विशेपकर अनाज, घी: तेल, गुड़, खाण्ड आदि खाद्य पदार्थोमें अच्छी तेजी होगी।

सुदी १ बुधवारी हर एक महीनेमें तेजी कारक होती है । ज्येष्ठमें विशेषतया खाद्य पदार्थोंमें तेजी और वर्षाका नाश करती है। भड्डुरी कहते हैं कि जेठकी पड़वा बुधवारी और आषाढी पूनमको मूल नक्षत्र हो तो भूकम्प हो। आज ही आर्द्राके दूसरे चरण पर शनि, मूंग, मोठ, उर्द, जो चणा, कपास तेज करेगा। गुरुवारा चन्द्रोदय तेजीको स्पोर्ट देगा । परन्तु आज रुई कपास घी खाण्ड चांदी मूंगफलीका भाव मन्दा रहेगा। जेठ सुदी ३ को आर्द्रा है अत: आज वर्षा हो तो आगे वर्षा ऋतुमें पानीकी खैंच और दुर्भिक्ष होवे। सुदी ४ शनिवारी रुई तेज करेगी, नोट कर लें। रोहिण्यां रवि: सरसों, अलसी, एरण्डा तिल तेल, सुपारी गुड़ खाण्ड, घी गेहूँ जौ चणा, सूत सण तेज, चांदी मन्दी, मेषे शुक्र: गल्लामें तेजी और भैसों में रोगकारक है। ता० २५ से २८ तक चांदी का भाव मन्दा रहेगा।

सुदी ८ का क्षय तेजीको स्पोर्ट देगा। २९ को कर्के भौम: सभी प्रकारका अनाज, ईख गुड़ खाण्ड रुई भैसें तेज करेगा । गंगादशहरा गुरु वारा सुभिक्ष (मन्दी) कारक है। ता० १ जून तिलहन, लोहा, जस्ता, इंडियन आयरन सोना, चांदी कपास तेज। २ को बाजार बन्द रहेगा, ३ को मन्दीका रुख रहेगा। पुष्ये भौम सोना तेज, देशमें पार्टीबाजीका आन्दोलन बढ़ेगा। मंगलवारी पूनम तेजी करेगी, रातको २ बजे चन्द्र ग्रहण आरंभ होकर सवा पांच बजे शुद्ध हो जायेगा । इसका फल अनाज, घी, तेल खाण्ड आदि मन्दे होकर तेज हों । मन्दीके झटकोंमें अन्नका स्टाक करने वाले आगे ३।४ मासमें ही लाभ उठायेंगे । अग्निकाण्ड और चोरियाँ अधिक होंगी। ज्येष्ठमें पांच मंगलवार तेजीके प्रतीक हैं। रुई सूत, चांदी, चावल चीनी आदि श्वेत पदार्थ तेज रहेंगे।

आषाढ मास

बदी १ बुधवारी, इस पक्षमें गेहूँ जौ चणा, बाजरा मूंग उर्द आदि अनाज घी तेल गुड़ खाण्ड शाक सब्जी आलू अदरक प्याज लौकी बैंगन आदि सभी खाद्य पदार्थ तेज होंगे। ता० ६ जून चांदी, रुई सूत, सन, बारदाना मन्दा। नारियल सुपारी, मूंग, मोठ चनामें घटबढ़। बदी २ की वृद्धि तेजीको प्रोत्साहन देगी। आज वायु चलती रहे तो आगे संवत् श्रेष्ठ होगा। ८ जून सरसों अलसी तिल तेल आदि तेज होगा। १० जून पंचमी सोमवारको वर्षा हो तो गेहूँका स्टाक करें। श्रवण नक्षत्रकी वृद्धि गल्ला तथा रस पदार्थ गुड़ खाण्ड आदि तेज करेगी। ११ को बाजारमें तेजीका रुख रहेगा। १३ को शनिका अस्त तिलहन, रुई, पाट कुष्ठा बारदाना तेज, रोगोंमें वृद्धि, व्यापारमें घटबढ़, वर्षामें रुकावट होगी। १४ की रात्रिको मिथुने रवि: रुई, कपास कन्द मूल पदार्थ (आलू अदरक, प्याज, मूंगफली, सोंठ, हल्दी) तिल तेल और सभी प्रकारका अनाज तेज होगा। गुरु दृप्ट होनेसे तेजीमें रुकावट हो सकती है। यह फल ५ से १४ जुलाई तक होगा। १६ रविवारको बुध वक्री होकर रुई कपासमें तेजी करेगा। रस पदार्थ तेज, अन्न शाक सब्जी मन्दी। १७ कृत्तिकाका शुक्र रुई, सूत बिनौला, तिल, तेल, चांदी, सोना मन्दा करेगा। १९

को आर्द्राके तीसरे चरण पर शनि बम्बई प्रान्तमें अन्नकी कमीसे दुर्भिक्ष, गुड़ तेज। ता० २० गुरुवारी अमावस्या सुभिक्ष सूचक है। वर्षा योग है। मिथुनमें सूर्य, चंद्र बुध शनि चतुर्ग्रही योग है अतः वर्षा अथवा युद्धके बादल छायंगे। सूर्यसे आगे मंगल होनेसे वर्षा नहीं होगी, या बहुत कम होगी। आज ही वृषे शुक्रः केतु संयोग होनेसे सभी प्रकारका अन्न, गुड़, खाण्ड चीनीमें अच्छी तेजी करेगा। २१ को आर्द्रायां रविः शुभ समयका हुआ है। चंद्रोदय भी मन्दी तथा वर्षाकारक है। परन्तु बदी २ की वृद्धि और सुदी २ का क्षय तेजीका ढोल पीट रही हैं। रात्रिको वक्री बुध पश्चिममें अस्त होगा, सोना, चांदी, रुई कपास अन्न तेज करेगा। द्वितीया नौमी दोनों शुक्रवारी उत्तम है। वर्षा श्रेष्ठ हो, जिन क्षेत्रोंमें वर्षा हो आगे भी वहां उत्तम वर्षा होगी। २४ को भी वर्षाका योग है। बाजार मन्दा। २५ को अश्लेषाका मंगल टीडी, मूषक आदिसे खेतीमें हानि होगी। २६ को रुई, कपास सूतमें मन्दीका रुख रहेगा। सुदी ११ क्रूरवारी तेजी करेगी। रोहिण्यां शुक्रः सुपारी छुहारे मुनक्का जायफल आदि मन्दे करेगा।

ता० १ जुलाई तिलहन, गुड़, खाण्ड रुई कपास तेज़, अन्न मंदा। ३ जुलाई बुधवारको मूल नक्षत्र सभी कष्टोंको मिटाने वाला है। गुरुवारी पूनम सुभिक्षकारी है। आरंभमें मूल नक्षत्र दुर्भिक्ष तथा अन्तमें पूर्वाषाढ़ सुभिक्ष करेगा।

ता० ३ को सूर्यास्त समय वायु परीक्षा होगी। पूर्व, पच्छिम उत्तर और इनके मध्यवर्ती कोणोंकी वायु उत्तम, तथा दक्षिण और उसके समीपवर्ती दोनों कोणोंका पवन नेष्ट होता है। आषाढ़ कृष्ण पक्षमें घीका भाव तेज रहेगा। कृष्णपक्षकी अपेक्षा शुक्लपक्षमें बाजार मन्दे रहेंगे।

शकुन विचार

वैशाख

वैशाखी पड़वा प्रथम बादल निकसैं भान,
उत्तम संवत्‌की यही, है उतम पहिचान।
अक्षय तृतीया के दिना, रोहिणीयुत गुरुवार,
उत्तम उपजै धान्य सब, घर-घर मंगलचार,
वैशाखी सित पंचमी जो वर्षे घनघोर,
ईंधन चारा भुसभरौ धरो नफा को जोर।

ज्येष्ठ

जेठ बदी एकादशी, द्वादशी बादल गाज,
शुभ सवत् वर्षा घनी, मन्दा बिकै अनाज।
पाँचै शुक्ला जेठमें बादल दखिनावाय,
गल्ला संग्रह कीजिये, आश्विन दुगुना भाव।

आषाढ

साढ बदी प्रतिपदाको, वर्षा बादल गाज,
अनावृष्टि दो मास तक मँहगा बिकै अनाज।
पूनम, नौमी साढ़ सुदी निर्मल निशा मयंक,
दुर्भिक्ष निश्चय जानिये दुखै भूखै रंक।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अप्रैल १९७४ ई०

ता० ६ शनिवार—सत्यव्रत चैत्री पूर्णिमा ईद ।
१० बुधवार श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे.टा. १०।२१
१२ शुक्रवार—गुडफ्राईडे
१३ शनिवार—मेषमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३० अर्धरात्रिके बाद, मेला वैशाखी ।
१४ रविवार - संक्रान्ति पुण्यकाल, कुम्भ-महापर्व हरिद्वार
१८ गुरुवार—वरुथिनी ११ व्रत श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती ।
१९ शुक्रवार—प्रदोषव्रत ।
२२ सोमवार—सोमवती अमावस्या
२३ मंगलवार—चन्द्रदर्शन मु० १५
२४ बुधवार—श्रीपरशुराम जयन्ती श्रीशिवाजी जयन्ती ।
२५ गुरुवार—अक्षया ३ श्रीबदरी-केदार यात्रा प्रारम्भ ।
२६ शुक्रवार—जगद्गुरु आद्यशंकराचार्य जयन्ती, श्रीसूरदास जयती
२७ शनिवार—श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती ।
२८ रविवार—श्री गङ्गा सप्तमी ।

मई १९७४ ई०

ता० २ गुरुवार—मोहिनी ११ व्रत ।
३ शुक्रवार— प्रदोषव्रत ।
४ शनिवार - श्रीनृसिंह १४ जयन्ती ।
५ रविवार—सत्यव्रत कूर्म जयन्ती ।
६ सोमवार—वैशाखी १५ बुद्धपूर्णिमा ।
७ मंगलवार—श्रीनारद ज० श्रीरवीन्द्रनाथ जयन्ती ।
९ गुरुवार—श्रीगणेश ४ व्रत चंद्रोदय स्टे. टा. ९।५५, श्री श्री माँ आनन्दमयी ज०
१४ मंगलवार—वृषभमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३०
१८ शनिवार—अपरा ११ व्रत ।
१९ रविवार—प्रदोष व्रत ।
२१ मंगलवार - वट सावित्री अमावस्या व्रत ।
२३ गुरुवार—चन्द्रदर्शन मु० ३०
२४ शुक्रवार—महाराणा प्रताप जयन्ती मेला हल्दीघाटी मेवाड़ ।
२५ शनिवार - श्रीगुरुअर्जुनदेव निधन दि०
३० गुरुवार—गङ्गादशहरा श्रीबटुकभैरव ज०
३१ शुक्रवार—निर्जला ११ व्रत. स्मार्त्त वै०

जून १९७४ ई०

ता० १ शनिवार—निर्जला ११ व्रत निम्बार्क ।
२ रविवार—प्रदोषव्रत ।
४ मंगलवार—सत्यव्रत पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण, श्रीकबीर ज० गुरुहरगोविन्द जयन्ती ।
ता० ८ शनिवार—गणेश ४ व्र। चं।उ० ९।५७
१४ शुक्रवार—मिथुनमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल अगले दिन ।
१६ रविवार—योगिनी ११ व्रत ।
१७ सोमवार—सोम प्रदोष व्रत ।
२० गुरुवार—अमावस्या ।
२१ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन श्रीजगदीशरथ-यात्रा, दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रा०
२८ शुक्रवार—भड्डली नवमी मेला शरीफ भगवती काश्मीर ।
३० रविवार—देवशयनी ११ व्र० चातुर्मास व्रत प्रारंभ ।

जुलाई १९७४ ई०

ता० १ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत ।
३ बुधवार—सत्यव्रत, वायुपरीक्षा ।
४ गुरुवार—गुरुपूर्णिमा व्यासपूजा ।

पण्डित श्रीगणपतिदेवजी शास्त्रीका देहावसान

गत पौष शुक्ला ६ दि० ३१ दिसम्बर १९७३ को मध्याह्न १२ बजे वाराणसीमें नव्य एवं प्राच्यगणितके प्रकाण्ड-पण्डित-दृक्सिद्धान्तके प्रबल समर्थक, प्रसिद्ध पंचांगकार, पं० श्रीगणपतिदेवजी शास्त्रीका अपने निवासस्थानमें देहावसान हो गया। आपने अपने पीछे पत्नी, एक पुत्र, पुत्रवधू एवं दो पौत्रियोंको छोड़कर शिव-सायुज्य प्राप्त किया है। मिलनसारिता निरभिमानता और मितभाषिता आपके प्रमुख गुण थे। आजसे दशवर्ष पूर्व जब मैं प्रथमबार आपके निवासस्थान रतन फाटक प्रातः १० बजे पहुँचा, उस समय आप पूजामें बैठे थे। मैंने अपना परिचयपत्र आपके पास पहुंचाया तो आप तुरंत द्वार पर पधार कर मुझे पूजागृहमें ले गये और वहीं बैठकर स्नेहपूर्ण वार्तालाप किया। आज भी मुझे आपकी नामानुरूप वह दिव्य भव्य मूर्ति सामने दिखाई दे रही है। दुर्दैवने हमारे इस श्रद्धेय स्नेही सहयोगीको छीनकर उत्तर भारतके समस्त पंचांगकारोंको शोकाकुल बना दिया है। इस दुःखद वेलामें शास्त्रीजीके परिवारके साथ हमारी हार्दिक सहानुभूति है और महामायासे प्रार्थना है कि वह शास्त्रीजीकी आत्माको शाश्वत शांति एवं पारिवारिक जनोंको यह दुःख सहन करनेकी शक्ति प्रदान करे।

अ० भा० ज्योतिषपरिषद् और ज्योतिष्मती-परिवारकी ओरसे मैं शास्त्रीजीको श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए उनका संक्षिप्त जीवनवृत्त प्रस्तुत कर रहा हूँ। —हरदेव शर्मा त्रिवेदी

शास्त्रीजीका संक्षिप्त जीवन वृत्त

पण्डित श्रीगणपति देव शास्त्रीजीका जन्म काशीमें मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थी १९४३ विक्रमी (४ दिसम्बर १८८६ ई०) को हुआ था। आप महामहोपाध्याय सी०आई०ई० पण्डित श्री बापूदेव शास्त्रीजीके सुपुत्र थे। अल्पआयुमें ही आपके पिताजीका देहावसान हो गया। आपने ज्योतिषशास्त्र विषयक समग्र अध्ययन पं० श्री चन्द्रदेव शास्त्रीजीसे किया था, जो आपके पिताके अन्यतम शिष्य थे। इसके अतिरिक्त आपने महामहोपाध्याय पं० रामशास्त्री तेलंगसे साहित्यशास्त्र, महामहोपाध्याय पं० लक्ष्मण शास्त्री तेलंगसे पाली एवं प्राकृत, भाऊ शास्त्री जुन्नरकर और बाजीराव मोटसे अंग्रेजी, डा० लद्धसे जर्मन और डा० वेनिस साहबसे शिलालेख शास्त्रका अध्ययन किया था। आपने १९१४ से १९४३ ईस्वी तक काशिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालयमें अध्यापन कार्य किया।

काशीमें सर्वप्रथम दृक् सिद्धान्त पंचांगका प्रवर्तन आपके पिताजी महामहोपाध्याय पं० बापूदेव शास्त्रीजीने तत्कालीन काशीराज ईश्वरीनारायण सिंहजीकी सम्मतिसे प्रारंभ किया था। उनका महाप्रयाण होनेपर ज्योतिर्मार्तण्ड सर्वश्री चंद्रदेव शास्त्री, विनायक शास्त्री वेताल, पं० महादेव शास्त्री घाटे आदि उनके शिष्य संवत् १९८० तक इस पंचांगका 'बापूदेव शास्त्रीजीका पत्रा' नामसे प्रवर्तन करते रहे। तदनंतर आपने इस पंचांगका निर्माण अपने हाथोमें लिया जिसका निर्वाह २०२३ विक्रमी तक करते रहे। माननीय डाक्टर सम्पूर्णानन्द के सत्प्रयत्नसे उत्तर-प्रदेशीय राज्यशासनके लिए स्थानीय राजकीय संस्कृत महाविद्यालय इसे प्रकाशित करने लगा। सन् १९६७ ई० तक आप इस पंचांगके प्रधान सम्पादक रहे। अब वाराणसेय संस्कृतविश्वविद्यालय अपने पंचांग विभाग द्वारा श्री पं० अवधविहारी त्रिपाठीके प्रधान सम्पादकत्वमें वाराणसीके एकमात्र दृक्पक्षीय इस शुद्ध पंचांगको स्व० बापूदेवजीकी स्मृतिमें प्रकाशित कर रहा है।

साहित्य-समीक्षा

[समालोचनार्थ प्रत्येक पुस्तककी दो-दो प्रतियां सम्पादकके पास पहुँचना आवश्यक है। एक प्रतिसे समालोचना प्रकाशित न हो सकेगी। —सम्पादक]

'गायत्री-रहस्य दर्पण'

पृष्ठ १७६+३२=२०८ मूल्य २.५०

लेखक—आचार्य श्री रामचन्द्र शास्त्री।

सम्पादक—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी।

प्रकाशक—श्रीगायत्री अखण्ड दीपक तपोभूमि, उर्दू पुरा, मारुति गंज, उज्जैन (म०प्र०)

द्विजमात्रके लिए गायत्रीकी उपासना परमावश्यक है। स्कन्दपुराण काशीखण्डमें कहा गया है कि गायत्री भगवान् विष्णु शिव और ब्रह्माका रूप है और गायत्री ही तीनों वेदों की जननी (वेदमाता) है।

गायत्र्येव परो विष्णुर्गायत्र्येव पर: शिव:।
गायत्र्येव परो ब्रह्मा गायत्र्येव त्रयी तत:॥

गायत्री सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी इस पुस्तकमें सम्पूर्ण ग्रन्थोंका मन्थन करके नवनीत रूपमें प्रस्तुत की गई है, अतः द्विजमात्रके लिए यह पुस्तक परमोपयोगी है। मंत्रप्रयोगकी महत्ता, गायत्रीपुरश्चरण-प्रयोग, प्रणवोपनिषद्, गायत्री रहस्योपनिषद्, गायत्री चालीसा, सहस्र-नामावली और संक्षिप्त नित्यकर्मविधि राष्ट्र-भाषा हिन्दीमें देकर ग्रन्थको सर्वसाधारणके लिए उपयोगी बनाया गया है। पुस्तकके अन्त में डा० रुद्रदेव त्रिपाठीने अपनी काव्यमयी भक्तिभरित संस्कृत-पद्यरचनाके ११० श्लोकोंमें 'गायत्री-लहरी' हिन्दी अनुवाद सहित ४८ पृष्ठों में देकर ग्रन्थकी महत्ताको द्विगुणित कर दिया है। लेखक और सम्पादक इस उत्तम प्रकाशनके लिए धन्यवादके पात्र हैं। कागज और छपाई उत्तम है। वर्तमान भयंकर मँहगाईके युगमें २०८ पृष्ठ के इस ग्रन्थका मूल्य अढाई रुपया भी बहुत उचित है। हमारा अनुरोध है कि प्रत्येक सद्गृहस्थके घरमें गीता और गंगाजलके समान इस गायत्री-रहस्य ग्रन्थकी एक प्रति भी अवश्य रहनी चाहिए।

'भविष्य-दर्शन'

पृष्ठ २:६ मूल्य १०) रु० पोस्टेज २।) रु०

रचयिता—श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी प्रेमस्वरूपानन्दजी सरस्वती (प्रेमबापूजी महाराज)

प्रकाशक—अ०भा० सनातन-विश्वकल्याण आध्यात्मिक सेवा संस्थान (पंजीकृत) कीर्तनेवाड़ी, बालासावंत लेन, पो० वसई जिला थाणा (बम्बई)

सारी पुस्तकको देखनेके अनन्तर हमें इसका नाम 'भविष्यदर्शन' कुछ जंचा नहीं, क्योंकि भविष्यकी घटनाओंका उल्लेख या भविष्य-वाणियां तो इसमें बहुत कम नहींके बराबर है। केवल एक वर्ष ७३-७४ का भविष्यफल पृष्ठ २४ से २९ तक सं० २०३० के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' से अक्षरशः उद्धृत किया गया है और पृष्ठ ३०-३१-३२ पर "स्वतन्त्रभारतके २७वें वर्षका भविष्य" 'ज्योतिष्मती' के गतांकसे

उद्धृत किया गया है। इसके अतिरिक्त आगामी वर्षोंका और कोई भविष्य विवेचन नहीं है और न भविष्य जाननेकी विधि या ग्रहयोगोंका ही अनुभव सिद्ध उल्लेख है। अतः इस पुस्तकका नाम "सनातन सदुपदेश संग्रह" होता तो उचित था। स्वामी प्रेमबापूजीके सदुपदेश, भावी योजनाएँ और कुछ ख्यातिप्राप्त राष्ट्रनायकोंके सम्बन्धमें व्यक्तिगत रूपसे की गई भविष्यवाणीका संग्रह विशद रूपमें किया गया है। प्रातःस्मरण, कर्म उपासना, ज्ञान, भक्तियोग, वेदान्तदर्शन पर कुछ लेख और सूक्तियाँ उपयोगी हैं। पूरा 'रामरक्षास्तोत्र' हिन्दी अनुवाद सहित दिया गया है। तुलसी कबीर आदि अनेक सन्त भक्त महापुरुषोंके आदर्श वाक्य देकर ग्रन्थको रोचक बनाया गया है। ज्योतिष आयुर्वेद और मंत्र-तंत्र सम्बन्धी अनुभूत प्रयोग भी दिये गये हैं। धर्म-प्रेमीजनोंके लिए पुस्तक उपयोगी है। कागज छपाई उत्तम है। परंतु २१६ पृष्ठकी इस पुस्तकका मूल्य १०) रुपये अधिक है। पृष्ठ १६७ से २१६ तक स्वामीजीके प्रेमी सन्त विद्वान् तथा भक्तजनों के ५२ चित्र देकर पुस्तकका कलेवर बढ़ाया गया है, इससे पाठकोंका कोई लाभ नहीं। इन ५२ चित्रोंके ब्लाक बनवाने और कागज छपाई में जो अपव्यय हुआ उसकी जगह पुस्तकका मूल्य कम करना अधिक हितकर होता। पुस्तक-रचयिता स्वामी प्रेमबापूजीकी मातृभाषा गुजराती है, अतः पुस्तकमें भाषा और प्रूफ सम्बन्धी यत्रतत्र अनेक त्रुटियां रह गई हैं। प्रकाशक महोदय भविष्यमें इसका ध्यान रक्खें तो उत्तम होगा। सब मिलाकर ग्रन्थ प्रत्येक सद्गृहस्थके लिए संग्रहणीय है।

'ज्योतिष्मती' के सम्बन्धमें जानकारी

रजिस्ट्रार न्यूजपेपर्स एक्टके नियम ८ के अन्तर्गत विज्ञप्ति

१. प्रकाशनका स्थान	ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)
२. प्रकाशनकी अवधि	प्रति तीसरे मासकी पूर्णिमा
३. ४. ५. मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक	हरदेव शर्मा त्रिवेदी
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)
६. स्वामित्व	**हरदेव शर्मा त्रिवेदी**

मैं हरदेव शर्मा त्रिवेदी घोषित करता हूं कि ऊपर दी गई जानकारी मेरे ज्ञानके अनुसार बिल्कुल ठीक है।

तिथि ११ मार्च १९७४ (ह०) **प्रकाशक—हरदेव शर्मा त्रिवेदी**

आवश्यक निवेदन

कागज और छपाईके मूल्यमें भारी वृद्धि हुई है। आवश्यकताके अनुसार कागज मिलना ही दुर्लभ हो गया है। अतः बड़े-बड़े प्रतिष्ठित दैनिक साप्ताहिक मासिकपत्रोंने पृष्ठ संख्या बहुत कम आधी कर दी है और कई पत्र बन्द हो गये हैं। इस विषम स्थितिमें भी हमने 'ज्योतिष्मती' के पृष्ठ अधिक नहीं घटाये और न मूल्य बढ़ाया है। अतः सहृदय पाठकोंका भी कर्तव्य है कि वे कमसे कम 'ज्योतिष्मती' का एक संरक्षक सहायक या आजीवन सदस्य बनाकर इस ज्ञानयज्ञमें सहयोग दें। यह न हो सके तो प्रत्येक ग्राहक कमसे कम एक नये ग्राहकका वार्षिक मूल्य ९) नौ रुपया मनीआर्डर द्वारा भिजवाकर ही अपनी सदाशयताका परिचय दें।

यह अङ्क दि० २ अप्रैल १९७४ को हम सब ग्राहकोंके नाम सोलनके बड़े डाकघरसे भेज रहे हैं। यदि किसी ग्राहकको ८ अप्रैल तक भी यह अङ्क न मिले तो वे अपना ग्राहक नम्बर लिखकर मंगवा लें। १० अप्रैलके बाद किसी भी ग्राहकको दुबारा अङ्क बिना मूल्य नहीं भेजा जावेगा। आज-कल डाकमें भी भारी अव्यवस्था है। ग्राहकोंके अनेक अंक गुम हो जाते हैं। हर बार लगभग २०० अङ्क दुबारा भेजते हैं। पर अब कागजकी दुर्लभताके कारण अंक सीमित छपे हैं, अतः १० अप्रैलके बादकी शिकायत पर हम दुबारा अंक किसीको भी नहीं भेज सकेंगे, यह नोट कर लें। पंचदशी यंत्रका अनुभव सिद्ध प्रयोग स्थानाभावके कारण इस अंकमें प्रकाशित न हो सका। आगामी अंकसे अनुभव सिद्ध मंत्रयन्त्र-प्रयोग और रमल तथा मूकप्रश्न पर विशेष लेख प्रकाशित होंगे।

ग्राहकोंको लाभदायक सूचना

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान १७वें वर्षके इस तीसरे अङ्क तक कुल ६७ अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। इन अङ्कोंमें ज्योतिष, आयुर्वेद, सामुद्रिक, रमल और मत्र तंत्र यत्र सम्बन्धी अनेक महत्व-पूर्ण उपयोगी लेख छपे हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध होना दुर्लभ है। दुर्लभ सामग्रीके कारण इन अंकोंमेंसे २१ अङ्क अब उपलब्ध नहीं है। शेष ४६ अङ्कोंकी भी थोड़ी प्रतियां बची हैं। गत १५वें वर्षका चौथा अङ्क तथा १७वें वर्षका दूसरा (गताङ्क) अब हमारे संग्रह में नहीं है। अनेक ग्राहक उक्त अंकों की मांग कर रहे हैं, परन्तु हम भेजनेमें असमर्थ हैं। प्रत्येक गत अङ्कका मूल्य २·५० है।

'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य ९·०० नौ रुपये है। पंचवर्षीय ३७.५०, दशवर्षीय ७५.०० आजीवन सदस्य शुल्क १२५.०० है। मूल्य मनीआर्डरसे प्राप्त होने पर ही अङ्क भेजे जावेंगे।

जो सज्जन 'ज्योतिष्मती' के दो नये ग्राहक बनाकर १८) रु० वार्षिक मूल्य मनीआर्डरसे भिजवा देंगे-उन्हें 'ज्योतिष्मती' के ३ गताङ्क ७।) रु० मूल्यके उपहारमें बिना मूल्य भेजे जावेंगे। और ३ नये ग्राहकोंका मूल्य २७) रु० भिजवा देंगे उन्हें ५ गताङ्क १२।) रु० मूल्यके उपहारमें भेजे जावेंगे। नये ग्राहकोंका पूरा नाम पता और मनीआर्डर रसीदका नम्बर लिखना होगा।

दो आजीवन सदस्योंके २५०) रु० भिजवाने वाले सज्जनको ७५) मूल्यके ३० गताङ्क और क्षयरोग चिकित्सा ग्रन्थ ३०० पृष्ठका ५) मूल्यका तथा 'केलिकुतूहल' नामक कामशास्त्रका अद्भुत ग्रन्थ भाषा-टीका सहित ५) रु० मूल्यका केवल डाक रजिस्ट्री खर्चके लिए ५) रु० भेजने पर निःशुल्क भेजे जावेंगे। वी०पी० नहीं होगी। मूल्य निम्नलिखित पते पर भेजें।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि० प्रेस सोलनमें छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन से प्रकाशित